RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल–011/2018-20

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र

वर्षः 75, अंक : 41 एक प्रति 2 : रुपये
रविवार 23 दिसम्बर, 2018
विक्रमी सम्वत् 2075, सृष्टि सम्वत् 1960853119
दयानन्दाब्द : 194 वार्षिक शुल्क : 100 रुपये
आजीवन शुल्क : 1000 रुपये
दूरभाष : 0181-2292926, 5062726
E-mail: apspunjab2010@gmail.com,
www.aryapratinidhisabha.org

वर्ष–75, अंक : 41, 20–23 दिसम्बर 2018 तदनुसार 8 पौष, सम्वत् 2075 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

स्वामी श्रद्धानन्द का बलिदान दिवस

ले.–श्री सुदर्शन शर्मा प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

23 दिसम्बर अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का बलिदान दिवस है। स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान अजेय प्रेरणा का प्रतीक है। आर्य धर्म की परम्पराएं त्याग और बलिदान पर आधारित रही हैं। महर्षि दयानन्द और धर्मवीर लेखराम के बलिदान और उसके बाद भी लक्ष्य के लिए प्राणों की आहुति देने की कड़ी परम्परा टूटी नहीं है। स्वामी श्रद्धानन्द ने उनके ही आदर्शों को पूरा करते हुए उस बलिदान की परम्परा को आगे बढ़ाया। स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने अपने धर्म के लिए, महर्षि दयानन्द के कार्यों को पूरा करने के लिये अपने आपको सर्वात्मना समर्पित किया हुआ था। मुंशीराम से यात्रा प्रारम्भ करके महात्मा मुंशीराम बने और महात्मा मुंशीराम से स्वामी श्रद्धानन्द बनें। स्वामी श्रद्धानन्द जी की एक विशेषता यह थी कि उन्होंने कभी भी विपरीत परिस्थितियों से मुँह नहीं मोड़ा। चुनौतियों का, कठिनाईयों का, मुसीबतों का सामना किया और अपने उद्देश्य प्राप्ति के लिए निरन्तर बढ़ते रहे। कोई भी बाधा, कोई भी चुनौती उन्हें धर्म के मार्ग से विचलित नहीं कर सकी। यही कारण था कि वे इतने महान् कार्यों को करने में सफल हुए। स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन पर भर्तृहरि जी महाराज का यह **नीति श्लोक पूर्ण रूप से चरितार्थ होता है–**

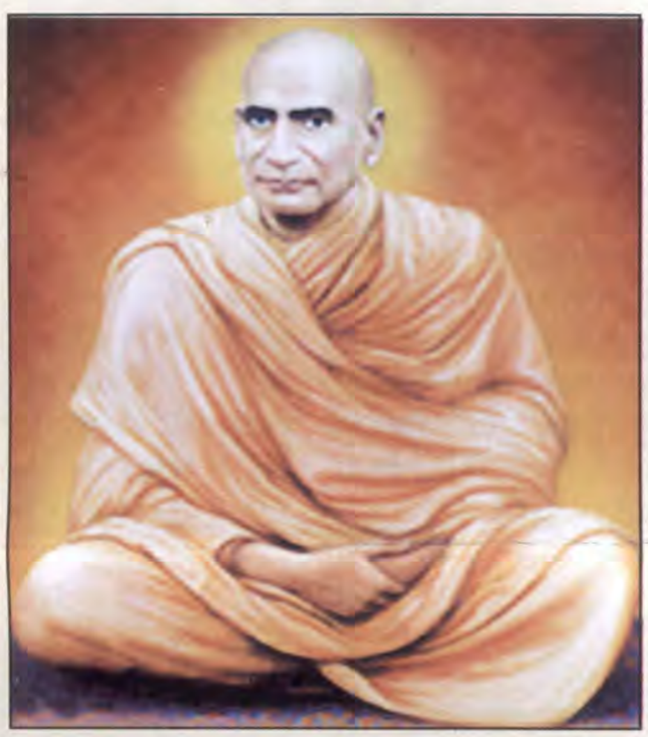

निदन्तु नीतिनिपुणा यदि वा स्तुवन्तु,
लक्ष्मी समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम्।
अद्यैव मरणमस्तु युगान्तरे वा,
न्यायात्पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः।।

भर्तृहरि जी महाराज लिखते हैं कि जो मनुष्य धर्म के मार्ग पर चलता है वह इस बात की चिन्ता नहीं करता है कि नीतिनिपुण लोग उसकी निन्दा कर रहे हैं या प्रशंसा करते हैं। ऐसा मनुष्य इस बात की परवाह नहीं करता कि धन आये अथवा जाए अर्थात् धन का आना या जाना उन्हें विचलित नहीं करता। संकल्पशील मनुष्य यह विचार कर पीछे नहीं हटता कि आज ही उसकी मृत्यु हो जाए या युगों के बाद हो अर्थात् शूरवीर योद्धा अपने प्राणों की चिन्ता किए बिना उद्देश्य की प्राप्ति के लिए जागरूक रहता है। इन सब बाधाओं के, कष्टों के आने पर भी जो धीर पुरूष है वह न्याय के मार्ग से विचलित नहीं होता है अर्थात् निरन्तर अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिए बढ़ता ही चला जाता है।

नीतिकार की कही हुई सभी बातें स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन पर पूर्ण रूप से चरितार्थ होती हैं। नीतिकार ने जिन–जिन परिस्थितियों की चर्चा की है वे सभी स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के जीवन में आई परन्तु वे कभी भी विचलित नहीं हुए। उन सब बाधाओं को रौंदते हुए चले गए और इतिहास में अपना नाम अमर कर गए। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने कभी भी इस बात की चिन्ता नहीं की कि लोग उनके बारे में क्या कहेंगे। जब स्वामी श्रद्धानन्द ने शुद्धि का कार्य प्रारम्भ किया तो कई लोगों ने उनकी निन्दा की। महात्मा गांधी भी उनके शुद्धि कार्य के विरूद्ध थे परन्तु स्वामी श्रद्धानन्द किसी की भी चिन्ता किए बिना अपने कार्य में लगे रहे और अन्त में अपने प्राणों की आहुति दे गए। जब गुरूकुल खोलने का विचार स्वामी श्रद्धानन्द जी के मन में आया तो कुछ लोगों ने उनका उपहास उड़ाया। परन्तु स्वामी श्रद्धानन्द ने किसी की ओर ध्यान नहीं दिया और अपनी धुन में लगे रहे। यहां तक कि उन्होंने यह प्रण किया कि जब तक गुरूकुल के लिए तीस हजार रूपये इकट्ठा नहीं कर लेता तब तक घर में वापिस नहीं आऊंगा। आज गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय उनकी त्याग और तपस्या का मूर्त रूप हम सबके सामने है। अगर स्वामी श्रद्धानन्द अपने संकल्पों पर अड़िग न रहते तो इतना महान् कार्य नहीं कर पाते। इसीलिए नीतिकार ने साहस, धैर्य आदि जिन गुणों का वर्णन किया है वे सभी गुण स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज में मौजूद थे। जामा मस्जिद से वेद मन्त्र का उच्चारण करते हुए अपना व्याख्यान प्रारम्भ करना स्वामी श्रद्धानन्द के अदम्य साहस का प्रतीक है।

23 दिसम्बर का दिन सम्पूर्ण आर्य जगत के लिए प्रेरणा का स्रोत है। यह दिन केवल उनका बलिदान दिवस मनाने का नहीं अपितु उनके द्वारा किए गए कार्यों को पूर्ण करने के लिए मनसा, वाचा, कर्मणा समर्पित होने का दिन है। स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का सम्पूर्ण जीवन आर्य समाज और महर्षि दयानन्द की विचारधारा के लिए समर्पित था। महर्षि दयानन्द की जिन–जिन कार्यों को करने की योजना थी, उन्हें मूर्त रूप देने का कार्य स्वामी श्रद्धानन्द महाराज ने किया। गुरूकुल कांगड़ी की स्थापना करके उन्होंने लार्ड मैकाले की शिक्षा पद्धति को तहस–नहस करने का प्रयास किया और गुरूकुल कांगड़ी से ऐसे विद्वानों को तैयार किया जिन्होंने आर्य समाज, वेदों की शिक्षा और महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों को पूरा करने के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया। ऐसे महापुरूष का जन्मदिवस मनाते हुए हमें भी उनके जीवन के गुणों को धारण करने का प्रयास करना चाहिए। स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस मनाते हुए हमारी यही भावना होनी चाहिए कि हम उनके कार्यों को आगे बढ़ाएंगे। अगर आर्य समाज की उन्नति के उद्देश्य के साथ हम सभी संकल्पित होते हैं तो निश्चय ही आर्य समाज उन्नति के पथ की ओर अग्रसर होगा और हमारी स्वामी श्रद्धानन्द के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

हम उस वीर संन्यासी की शहादत को भूल गए

ले.-धर्म देव चक्रवर्ती 16 माडल बस्ती, नई दिल्ली

समय की पुकार है कि हिन्दुस्तान के नगर-नगर में एक-एक नया नर केसरी श्रद्धानन्द जैसा पैदा हो जो हाथ में शुद्धि की विजय-पताका ले कर यूरोप-अमरीका और अरब देशों से आने वाले लाखों करोड़ों डालरों के मायाजाल में इस देश की भूखी-नंगी अशिक्षित पिछड़ी जातियों को फंसा कर उनका धर्म-परिवर्तन करने वाले राष्ट्र द्रोही ईसाइयों और मुसलमानों को ललकार कर चेतावनी दे-'बस बहुत हो चुका, अब एक भी हिन्दू को पतित करने की तुम्हारी कुचेष्टा सहन नहीं की जाएगी और जिनको तुमने या तुम्हारे बुजुर्गों ने विगत सैंकड़ों सालों में तलवार की नोंक पर या आर्थिक प्रलोभन दे कर पतित किया है, उन सबको शुद्धि के गंगाजल से पवित्र करके पुन: वैदिक धर्म की शरण में ले लिया जाएगा।'

यह भी समय की पुकार है कि एक और साहस एवं शौर्य का पुंज श्रद्धानन्द पैदा हो जो एक बार फिर जामा मस्जिद के मिम्बर पर खड़ा हो गम्भीर वाणी में वेद मन्त्रों का उच्चारण करते हुए सब को न केवल सच्ची राष्ट्रभक्ति की दीक्षा दे बल्कि भारतीय संस्कृति पर गर्व करने की प्रेरणा भी दे।

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द ने सुप्तप्राय: हिन्दू जाति को विनष्ट होने से बचाने के लिए और धर्मान्ध मुसलमानों द्वारा किए जाने वाले अत्याचारों को रोकने के लिए उसी प्रकार शुद्धि का सुदर्शन-चक्र हाथ में लिया था जिस प्रकार भगवान कृष्ण ने 'विनाशाय च दुष्कृताम्' का घोष करते हुए तत्कालीन अभावग्रस्त जन-प्रतिनिधियों को स्वार्थ परायण सत्ताधारियों के अत्याचारों से बचाने के लिए सुदर्शन चक्र हाथ में लिया था।

जिस माटी से रणनीति के कुशल योद्धा छत्रपति शिवाजी महाराज बने थे, जिस माटी से हिन्दूकुल-सूर्य महाराणा प्रताप का निर्माण हुआ था, जिस माटी से हिन्दुओं की मुर्दा रगों में नया खून भरने वाले और धर्म की रक्षा के निमित्त 'चिड़ियों से मैं बाज लड़ाऊं' तब गोविन्द सिंह नाम कहाऊं' का सिंह नाद करते हुए मुगलों के दांत खट्टे करने वाले गुरु गोविन्द सिंह बने थे और जिस माटी से वीर बंदा बैरागी जैसा वह अनुपम बलिदानी बना था जिसकी खाल गरम तपती सलाखों से इसलिए नोची गई थी कि वह अपना प्राणों से प्यारा हिन्दू धर्म छोड़ कर मुसलमान बन जाए लेकिन ऐसे नृशंस अत्याचार सह कर भी जिसने जान दे दी पर आन न दी-उसी माटी के बने थे अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द!

हिन्दू जाति की विडम्बना

हिन्दू जाति की विडम्बना यह है कि ईसाई और मुसलमान तो इसकी संस्कृति को और स्वयं इसको ही समूल नष्ट कर देने के कुचक्र चलाते ही रहते हैं, पर इसके अपने ही स्वधर्मी भी इसके पीछे हाथ धो कर पड़े रहते हैं। यही कारण है कि आर्य समाज के जनक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपने अमर ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' में, जहां हिन्दू जाति के विधर्मी शत्रुओं की अच्छी खासी खबर ली है वहां उन स्वधर्मी पंडे पुजारियों, सन्तों, महन्तों, शंकराचार्यों, मठाधीशों और तथाकथित धर्माचार्यों की भी अच्छी-खासी धुनाई की है जो जन्मगत जाति व्यवस्था को वेद और शास्त्र सम्मत बताते हुए हिन्दुओं के एक बड़े वर्ग को शूद्र और अछूत कहते हैं और इस प्रकार इन्हें हिन्दू जाति की मुख्य धारा से काट कर विधर्मी बनने को बाध्य करते हैं तथा हिन्दू जाति के निरन्तर ह्रास का कारण बनते है। महर्षि दयानन्द का मन्तव्य है कि 'जन्मना जायते शूद्र: संस्काराद् द्विज उच्यते'-अर्थात् जन्म से तो सभी शूद्र पैदा होते हैं, किन्तु उसके बाद अपनी बुद्धि, गुणकर्म, व्यवसाय एवं कार्यकलाप द्वारा हर कोई उत्तरोत्तर की प्रगति करता हुआ वैश्य, क्षत्रिय या ब्राह्मण बन सकता है, भले ही इसका जन्म किसी भी कुल में हुआ हो।

अपने गुरु महर्षि दयानन्द की मान्यता के इसी सूत्र को हाथ में लेकर स्वामी श्रद्धानन्द ने हिन्दू जाति में प्रचलित जातिगत वर्ण व्यवस्था एवं छुआछूत के विरुद्ध जंग का बिगुल बजा दिया। उन्होंने अपना सर्वस्व त्याग कर गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना की जहां जन्मगत वर्ण व्यवस्था के भेद-भाव के बिना मनुष्य मात्र को वैदिक संस्कृति पर आधारित शिक्षा दी जाने लगी और ज्यों एक नये राष्ट्र के निर्माण की आधारशिला रखी गई। उन्होंने अस्पृश्य समझे जाने वाले दलितवर्ग के उत्थान के लिए दलितोद्धार सभा की भी नींव रखी और सबसे बढ़ कर उन्होंने यह कार्य किया कि बलात् अथवा प्रलोभन द्वारा ईसाई और मुसलमान बनाये गए भारत-वंशियों को पुन: हिन्दूधर्म में दीक्षित करने के लिए शुद्धि आन्दोलन का सूत्रपात किया। इसी शुद्धि आन्दोलन की बदौलत हजारों धर्मान्तरित हिंदू पुन: वैदिक धर्म की गोद में लौटे। पंजाब में नीची जाति के समझे जाने वाले मेघ, राजस्थान और हरियाणा में मेव और ओड़ तथा मालाबार में हजारों व्यक्ति पुन: शुद्ध हो कर हिंदू धर्म की शरण में लौट आये! जब शुद्धि आन्दोलन के परिणाम-स्वरूप जाति की मृत-प्राय देह में नवजीवन का संचार होने लगा और इस नवजीवन में यौवन का रक्त भरने के लिए जिस समय स्वामी श्रद्धानन्द की सबसे अधिक आवश्यकता थी, उसी समय एक धर्मान्ध कायर मुसलमान ने पिस्तौल की तीन गोलियां स्वामी जी के सीने में उतार दीं। स्वामी जी के सीने से रक्त के फव्वारे छूट निकले। जिस रक्त ने आन्दोलन द्वारा नवजीवन प्राप्त हिन्दू जाति की देह में यौवन का उन्माद फूंक एक समर्थ सबल हिन्दू राष्ट्र का निर्माण करना था, वह परम पवित्र रक्त अकारण मिट्टी में मिल गया।

शहादत को भूल गए

स्वामी श्रद्धानन्द की शहादत के बाद चाहिए तो यह था कि प्रत्येक नवयुवक स्वयं श्रद्धानन्द बन जाता और उनके दिखाए रास्ते पर चलते हुए शुद्धि आन्दोलन को दावानल की तरह भारत के कोने-कोने में फैला देता, ताकि इस आग में विधर्मियों के सभी कुचक्र जल कर राख हो जाएं और हिन्दू जाति के जो अंग इन कुचक्रों का शिकार होकर विधर्मी बन गये थे वे शुद्धि आन्दोलन की आग में तप कर कुन्दन बन जाएं एवं एक बार फिर हिन्दू जाति के भाल पर मणि के समान सुशोभित हों। किंतु हाय रे! हम फिर सो गए! हम उस वीर की शहादत के खून को भूल गए। हम ने श्रद्धानन्द द्वारा प्रदीप्त शुद्धि दीपक की लौ को अपनी ही फूंक से बुझा दिया। अब हम एक बार फिर अपने सर्वनाश के चौराहे पर आ खड़े हुए हैं। हमने अपनी जीवन-नौका की पतवारें उन राजनीतिबाजों के हाथों में सौंप दी हैं जिनका एक मात्र धर्म अपनी स्वार्थ-सिद्धि के लिए अल्पसंख्यकों के तुष्टिकरण के खूंटे के गिर्द नाचना है-जिन्हें स्वयं को हिन्दू कहते लाज लगती है और हिन्दू संस्कृति के नाम से ही जिन पर मानों गाज गिरती है।

आज समय की पुकार है कि प्रत्येक हिन्दू युवक हिन्दू जाति को विनाश के गर्त से निकालने के लिए स्वयं स्वामी श्रद्धानन्द बन जाए और देश के नगर-नगर, गली-गली में शुद्धि का डंका बजा दे। यदि हम अब भी न चेते तो हमारा विनाश निश्चित है। अपनी पिछड़ी जातियों के प्रति भूतकाल में किये गये अन्याय का प्रायश्चित्त और प्रतिकार हमें तुरन्त करना होगा, अन्यथा वह दिन दूर नहीं जब अपने ही देश में हम अपना बहुमत गंवा बैठेंगे और अपने ही घर में बेगाने हो कर रह जाएंगे।

मैं कहना चाहता हूं-

मैं हिन्दू कारखानेदारों और व्यवसायियों से कहना चाहता हूं कि अपने धर्म में लौटने की इच्छा रखने वाले तमाम बेरोजगारों के लिए रोजगार के दरवाजे खोल दो। मैं मठाधीशों और बड़े-बड़े मन्दिरों के अधिकारियों से कहना चाहता हूं कि हिन्दूधर्म में वापस लौटने वाले व्यक्तियों के लिए अथाह सम्पत्ति से भरी अपनी तिजोरियों और बैंक बैलेंसों को खोल दो। मैं शिक्षकों से कहना चाहता हूं कि वे विद्यार्थियों में राष्ट्रीयता का भाव कूट कूट कर भर दें। और मैं बच्चों से कहना चाहता हूं कि वे वीर हकीकत राय और गुरु गोबिन्द सिंह के पुत्रों की तरह अपने धर्म पर मर मिटने का संकल्प लें। सोते-जागते उनके सामने बस एक ही लक्ष्य रहे-''सिर जावे तो जावे, मेरा वैदिक धर्म न जावे।'' मैं बहनों से कहना चाहता हूं कि मेरी एक-एक बहन रानी दुर्गावती और महारानी लक्ष्मी बाई बन कर देश और धर्म पर मर मिटने को प्रस्तुत रहे। और मैं माताओं से कहना चाहता हूं कि-'माता एहा पूत जण जेहा श्रद्धानंद'

जिस दिन देश का बच्चा-बच्चा श्रद्धानन्द बन जाएगा, उस दिन न देश में अस्पृश्यता का कलंक रहेगा, न छूआछूत का भूत रहेगा, न भारतीय वैदिक संस्कृति का उपहास होगा, न नैतिक मूल्यों का ह्रास होगा और न ही वैदिक हिन्दू धर्म पर कोई आंख उठाने का दुस्साहस करेगा। हिन्दुत्व की नींव मजबूत हो जाएगी और विश्व के गगन में हिन्दूराष्ट्र की विजय-पताका गर्व से लहराने लगेगी।

सम्पादकीय

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द

जब भारत में विदेशी शासन की जड़ें हिलने लगी थी, तब प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम के क्रान्तिकारी सेनानी तांत्या टोपे, महर्षि दयानन्द आदि अंग्रेजों की गुलामी की जंजीरों में जकड़ी हुई भारत माता के माथे पर स्वतन्त्रता का ताज रखने की तैयारियां कर रहे थे उसी पावन एवं क्रान्तिकारी वेला में सन् 1856 में जालन्धर के तलवन ग्राम में लाला नानक चन्द के घर स्वामी श्रद्धानन्द (मुन्शीराम) का जन्म हुआ था। मुंशीराम के पिता पुलिस के उच्च अधिकारी थे। बालक मुंशीराम की शिक्षा बनारस से प्रारम्भ हुई, जहां पर उनके पिता लाला नानक चन्द इंस्पेक्टर जनरल पुलिस थे। फिर मुंशीराम ने लाहौर से वकालत की परीक्षा पास की। मुन्शीराम का विवाह जालन्धर के रईस राय सालिगराम की पुत्री शिवदेवी के साथ हुआ। उस समय उनके पिता का स्थानान्तरण बरेली हो गया। इन दिनों में मुन्शीराम के चरित्र में दोष आ गया। वे बेलगाम घोड़े की तरह मद्यपान और वेश्याओं के नाच रंग में तल्लीन हो रहे थे और धर्म तथा ईश्वर की सत्ता मानने से भी इन्कार करने लगे थे। बनारस में एक दिन वे काशी विश्वनाथ के मन्दिर में गए। वहां उन्हें प्रविष्ट होने से रोका गया और बताया गया कि एक रानी साहिबा भगवान विश्वनाथ के दर्शन करने मन्दिर में गई हुई हैं। उनके बाहर आने के बाद ही किसी अन्य दर्शनार्थी को मन्दिर में जाने दिया जाएगा। युवा मुन्शीराम के मन पर चोट लगी कि भगवान के मन्दिर में भी राजा और रंक में भेद है। इससे उनके अन्दर नास्तिकता के भाव पैदा होने लगे। इसके पश्चात वे ईसाई मत की ओर आकर्षित हुए परन्तु वहां पर भी उन्होंने ऐसे घृणित दृश्य देखें कि उन्हें ईसाई मत से भी घृणा हो गई। मुन्शीराम उन दिनों मांस, शराब और नास्तिकता के शिकार हो चुके थे। कुछ दिनों पश्चात बरेली में महर्षि दयानन्द का पदार्पण हुआ। बरेली में स्वामी दयानन्द सरस्वती के व्याख्यानों का प्रबन्ध करने के लिए सरकारी आज्ञा हुई तथा लाला नानक चन्द जी को नियुक्त किया गया। सभा के प्रबन्धक के रूप में लाला नानक चन्द जी महर्षि के व्याख्यानों से प्रभावित हुए। उन्होंने सोचा कि अपने नास्तिक पुत्र को सत्संग में लाना चाहिए। नानक चन्द जी ने अपने पुत्र मुन्शीराम को कहा कि मेरे साथ सत्संग में जाना है। मुन्शीराम बोला, पिताजी यह संस्कृत जानने वाला साधु मेरे तर्कों का उत्तर दे सकता है? उनके पिता ने कहा- बेटा चलने में क्या हर्ज है। यदि उनकी बात समझ में न आए तो मत मानना। इसके पश्चात मुन्शीराम प्रथम बार महर्षि दयानन्द का भाषण सुनने गए। जब महर्षि दयानन्द पर उनकी दृष्टि पड़ी तो अत्यन्त तेजोमय मुखमण्डल ब्रह्मचर्य की आभा से ओतप्रोत सुडौल शरीर को देखा और वाणी का पाण्डित्यपूर्ण उच्चारण तथा श्रोताओं में बरेली में बड़े-बड़े उच्च अंग्रेज अधिकारियों को देखा तो मुन्शीराम प्रथम साक्षात्कार में ही प्रभावित हो गया। भाषण के पश्चात महर्षि के चरणों में उपस्थित होकर कहा कि क्या मेरी शंकाओं का समाधान भी किया जाएगा। स्वामी जी ने प्रसन्नतापूर्वक उनके प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया। मुन्शीराम ने ईश्वर की सत्ता पर तीखे प्रहार किए परन्तु स्वामी जी ने बड़े प्रेम से उत्तर दिए। थोड़े समय के पश्चात मुन्शीराम अवाक् होकर बोले महाराज आपने मेरी जबान तो बन्द कर दी किन्तु हृदय में विश्वास नहीं होता कि इस ब्रह्माण्ड को बनाने वाली कोई शक्ति सम्पन्न सत्ता है। महर्षि दयानन्द बोले जब ईश्वर की कृपा होगी तो यह विश्वास भी हो जाएगा। इन शब्दों ने मुन्शीराम के ऊपर जादू का असर किया और वे प्रतिदिन श्री महाराज के चरणों में उपस्थित होकर अपने आपको निहाल करते रहे। यही वह घटना थी जिसने मुन्शीराम के मानस पटल को बदल दिया और धर्म परायण धर्मपत्नी शिवदेवी की प्रेरणा और अन्य घटनाओं से मांस और शराब छूट गई। वकालत करते हुए उनकी गणना उस समय प्रसिद्ध वकीलों में होती थी। वे झूठे मुकद्दमें की पैरवी नहीं करते थे। मुन्शीराम के ऊपर जब आर्य समाज का रंग चढ़ गया तो उन्होंने वकालत छोड़कर वानप्रस्थाश्रम में प्रवेश किया।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब को अपने योगदान से देश भर में अग्रगण्य संस्थाओं में लाकर खड़ा कर दिया। उस समय उनके सामने ऐसे विद्यालय स्थापित करने का प्रस्ताव विचाराधीन था जिससे अंग्रेजी सत्ता के चंगुल से भारतीय विद्यार्थी बचाए जा सकें। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए उन्होंने गुरूकुल कांगड़ी की स्थापना हरिद्वार में की और अंग्रेजी राज्यकाल में यह प्रथम विद्यालय था जिसमें शिक्षा का माध्यम हिन्दी रखा गया। कल्याण मार्ग के पथिक महात्मा मुन्शीराम ने सर्वात्मना त्याग भावना से प्रेरित होकर अपनी जालन्धर वाली कोठी व सब सम्पत्ति आर्य समाज को दान कर दी। परमात्मा में उनकी असीम श्रद्धा थी इसलिए उन्होंने सन्यास के पश्चात अपना नाम श्रद्धानन्द रखवाया।

स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने गुरूकुल कांगड़ी की स्थापना करके आर्य समाज को एक नई दिशा देने का कार्य किया। लार्ड मैकाले की जिस शिक्षा पद्धति के द्वारा भारतीय संस्कृति और सभ्यता का पतन हो रहा था, उसे रोकने का प्रयास स्वामी श्रद्धानन्द जी ने किया। स्वामी श्रद्धानन्द ने गुरूकुल कांगड़ी की स्थापना वैदिक आदर्शों के अनुरूप की थी। वेद में मन्त्र आता है कि-उपह्वरे गिरीणां सङ्गमे च नदीनाम्। धिया विप्रोऽजायत। ऐसे रमणीय स्थल पर गुरूकुल की स्थापना करने के पीछे स्वामी श्रद्धानन्द का यही उद्देश्य था कि यहां से निकलने वाले ब्रह्मचारी वेद की ज्योति को घर-घर तक पहुंचाएं। जिस संस्कृति के विषय में महर्षि मनु जी महाराज ने कहा था कि-

एतद्देश प्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः।।

स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने गुरूकुल कांगड़ी की स्थापना के माध्यम से प्राचीन ऋषियों-मुनियों की परम्परा को स्थापित करने का प्रयास किया जिसे पाश्चात्य संस्कृति के प्रवाह में भारतवासी भूल चुके थे। जब स्वामी श्रद्धानन्द जी ने गुरूकुल कांगड़ी का प्रबन्ध आचार्य रामदेव को सौंप कर दिल्ली की ओर प्रस्थान किया तो उनके राजनैतिक और सामाजिक जीवन का उदय हुआ। राजनैतिक और सामाजिक जीवन में भी स्वामी श्रद्धानन्द ने उतनी ही श्रद्धा के साथ कार्य किया जितनी श्रद्धा के साथ उन्होंने अन्य क्षेत्रों में कार्य किया था। समर्पण और त्याग के इन्हीं गुणों के कारण स्वामी श्रद्धानन्द जी की कीर्ति दिन प्रतिदिन बढ़ रही थी। जिस कार्यकुशलता के साथ उन्होंने राजनैतिक गतिविधियों को संचालित किया, उसके कारण ही वे हिन्दू और मुस्लिम दोनों वर्गों में लोकप्रिय हो गए। जलियांवाला बाग हत्याकाण्ड के बाद जब कोई कांग्रेस का नाम लेने वाला नहीं था, उन परिस्थितियों में स्वामी श्रद्धानन्द ने अमृतसर में काँग्रेस का अधिवेशन बुलाया और स्वयं उसके स्वागताध्यक्ष बने। कांग्रेस के इतिहास में यह पहला अवसर था जब उन्होंने अपना भाषण अंग्रेजी के बजाय हिन्दी में दिया था।

स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने हिन्दुओं और मुसलमानों की एकता पर जोर दिया। वे अंग्रेजों की बांटों और राज करो की नीति को समाप्त करना चाहत थे। इसलिए मुस्लिमों में उनके प्रति सम्मान की भावना थी। जामा मस्जिद की प्राचीर से वेद मन्त्र का उच्चारण करते हुए भाषण की शुरूआत करने वाले पहले गैर मुस्लिम व्यक्ति थे। परन्तु जब स्वामी श्रद्धानन्द जी ने देखा कि कांग्रेस भी अंग्रेजों के नक्शे कदम पर चलते हुए मुस्लिम तुष्टिकरण में लगी हुई है तो उन्होंने कांग्रेस से त्यागपत्र देकर राजनैतिक गतिविधियों को समाप्त कर दिया और शुद्धि आन्दोलन प्रारम्भ किया और खुले रूप से भारतीयकरण का कार्य अपने हाथ में लिया। उनके द्वारा प्रारम्भ किए गए शुद्धि आन्दोलन से नाराज होकर एक मतान्ध मुसलमान ने स्वामी श्रद्धानन्द की गोली मारकर हत्या कर दी।

23 दिसम्बर को हम सभी मिलकर उनके बलिदान दिवस को मनाएं और उनके बताए हुए पदचिह्नों पर चलकर देश, धर्म और संस्कृति के लिए कार्य करें। यही हमारी स्वामी श्रद्धानन्द जी के प्रति हार्दिक श्रद्धांजलि होगी।

प्रेम भारद्वाज
सम्पादक एवं सभा महामन्त्री

कर्मयोगी स्वामी श्रद्धानन्द जी

ले.-श्री कृष्णदत्त जी एम० ए०, बी० एड० हैदराबाद

सन् १९२६ ई० को २३ दिसम्बर को दिल्ली के बलिदान भवन में स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज को अब्दुर्रशीद ने गोलियों का निशाना बनाया। स्वामी जी एक वीर की भान्ति जीये और एक बहादुर की भान्ति वीर गति को प्राप्त किया। स्वामी जी का जीवन अनेक अद्भुत घटनाओं से परिपूर्ण है। विद्यार्थी जीवन में एक ऐसी घटना घटी कि वे आस्तिक से नास्तिक बन गये। सन् १८७५ में मुन्शी-राम जी (संन्यास लेने से पूर्व का नाम) काशी में थे। विद्यार्जन के साथ-साथ व्यायामशाला में व्यायाम करना, गंगा स्नान और काशी विश्वनाथ के दर्शन करना भी नित्य कर्म बन गया था। नित्य की भान्ति जैसे ही मुन्शीराम काशी विश्वनाथ के मन्दिर के प्रवेश द्वार पर पहुंचे, पहरेदारों ने यह कहकर रोक दिया कि जब तक भीतर रीवां की महारानी हैं अन्दर किसी को जाने नहीं दिया जाएगा स्वयं मुन्शीराम जी ने लिखा है, ''इस रुकावट से मेरे दिल पर ऐसी ठेस लगी, जिसका वर्णन लेखनी नहीं कर सकती। जी घबरा उठा और मैं उठा और उलटा चल दिया। (कल्याण मार्ग का पथिक पृष्ठ ३४) इस घटना से पहले उन्हें ईसाई धर्म ने अपनी ओर आकृष्ट किया था। किन्तु वहां के एक घृणित दृश्य ने उन्हें ईसाई धर्म से ही विमुख कर दिया। उसके उपरान्त उन्हें संस्कृत सीखने का शौक हुआ। एक पं० विद्याधर से संस्कृत सीखने का कार्य आरम्भ हुआ। उनके सामने मुन्शीराम जी ने अपने हृदयस्थ सन्देहों का दफ्तर खोल दिया। वे मुन्शीराम जी का समाधान नहीं कर सके फलस्वरूप संस्कृत सीखना भी बन्द कर दिया। वे संस्कृत के भी विरोधी हो गये बांसबरेली में महर्षि दयानन्द प्रचारार्थ पहुंचे। १८७९ ई० का वर्ष था। मुन्शीराम के पिता कोतवाल थे। स्वामी जी महाराज की सभा में शान्ति बनाये रखने का भार उन्हीं पर था। वे स्वामी जी का भाषण सुनकर बहुत प्रभावित हुये। दूसरे दिन मुन्शीराम से कहा, 'बेटा मुन्शीराम एक दण्डी संन्यासी आए हुए हैं। बड़े विद्वान् और योगीराज हैं। उनकी वक्तृता सुनकर तुम्हारे संशय दूर हो जाएंगे। कल मेरे साथ चलना। उत्तर में कह तो दिया कि चलूंगा परन्तु मन में यही भाव रहा कि केवल संस्कृत जानने वाला साधु बुद्धि की बात क्या करेगा?' (कल्याण मार्ग का पथिक पृष्ठ ५१) परन्तु महर्षि के संपर्क और सत्संग ने जो प्रभाव किया वह उन्हीं के शब्दों में इस प्रकार है-तुम्हारे सहवास ने मुझे कैसी गिरी हुई अवस्था से उठकर सच्चा जीवन लाभ करने के योग्य बनाया।'

मुन्शीराम जी जालन्धर में वकील थे उनकी पुत्री वेद कुमारी ईसाईयों के स्कूल में पढ़ती थी। कोर्ट से लौटे तो पुत्री को यह गाते हुये सुना-

इक बार ईसा-ईसा बोल,
तेरा क्या लगेगा मोल।
ईसा मेरा राम रमिया,
ईसा मेरा कृष्ण कन्हैया।।

मुन्शीराम जी विचलित हो उठे और निश्चय किया कि एक पुत्री पाठशाला खोलकर विद्यार्जन की ओर अग्रसर होने वाली भावी पीढ़ी को विधर्म की ओर बढ़ने से रोका जाए। १८९१ ई० में कन्या पाठशाला की स्थापना हुई। सन् १९०१ ई० में मुन्शीराम जी ने गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना की। गुरुकुल की स्थापना राष्ट्रीय शिक्षा का सर्वप्रथम प्रयोग था। देश के मन और मस्तिष्क को अंग्रेजों का गुलाम बनाने के उद्देश्य से आरम्भ की गई लार्ड मैकाले की शिक्षा योजना के विरुद्ध यह एक खुला आन्दोलन था एक शक्तिशाली विद्रोह था। गुरुकुल वस्तुत: एक विश्वविद्यालय हैं-भारतीयों द्वारा भारतीय भाषा के माध्यम में और भारतीय शिक्षार्थियों के लिए आरंभ किया गया। देश का सर्व प्रथम विश्व विद्यालय हैं। स्थापना काल से ही कला और विज्ञान की स्नातकोत्तर तक की शिक्षा के लिए देश की राष्ट्र भाषा हिंदी के माध्यम से शिक्षा का प्रयोग, वस्तुत: उस समय एक पागलपन ही समझा जाता था। पुस्तकों के अभाव को पुस्तकें लिखवा कर दूर किया गया। चुन-चुन कर विद्वानों को आमन्त्रित करके अध्यापकों की समस्या को हल किया गया। पारिभाषिक शब्द बनाये गये। इस विश्वविद्यालय की डिग्रियों के नाम भी भारतीय रखे गये। प्रारम्भ में सभी ने मखौल उड़ाया। उनके कार्य को अव्यवहारिक बताया। किन्तु स्वामी श्रद्धानन्द जी के प्रचण्ड साहस और दृढ़ निश्चय ने असम्भव को संभव बना दिया।

राष्ट्र भाषा हिन्दी की दृष्टि से गुरुकुल विश्वविद्यालय की स्थापना एक ऐतिहासिक घटना है। ''भारतीय शिक्षा की समस्याएं'' नामक ग्रन्थ में लिखा गया हैं-''बीसवीं शती के उषाकाल में भारतीय में जिन राजनैतिक, सामाजिक और धार्मिक क्रान्तियों का अविर्भाव हुआ, उन्हीं के मध्य गुरुकुलों के निर्माण के आन्दोलन का जन्म हुआ। गुरुकुल भारतीय शिक्षा क्षेत्र में एक अभूतपूर्व प्रयोग और संस्कृति पुर्नत्थान है।'

स्वामी श्रद्धान्द जी के सम्बन्ध में म० महात्मा गांधी ने 'मेरे समकालीन' नामक पुस्तक में लिखा हैं, ''स्वामी जी सुधारक थे। वे कर्मवीर थे, वे वचनवीर नहीं थे। जिनमें उनका विश्वास था, उनका वह पालन करते थे।''

स्वामी जी ने आर्य समाज के प्रचार के लिए उर्दू में एक साप्ताहिक पत्र 'सद्धर्म प्रचारक' नाम से निकला। इसका काफी प्रचार था। स्वामी जी ने अचानक निश्चय किया कि सद्धर्म प्रचारक का अगला अंक हिन्दी में निकलेगा और पत्र हिन्दी में ही निकलने लगा। आज से ७०-८० वर्ष पूर्व उर्दू के गढ़ पंजाब में यह घटना स्वामी जी के हिन्दी के प्रति प्रेम और उनके साहस का उदाहरण है। सद्धर्म प्रचारक जालन्धर से निकलता था, हिन्दी में पत्र के मुद्रण की व्यवस्था वहां नहीं थी। अत: पत्र दिल्ली में हिन्दी में मुद्रित होता और जालन्धर से प्रकाशित होता था।

सन् १९१९ में अमृतसर में कांग्रेस का अधिवेशन होने वाला था। स्वामी जी स्वागताध्यक्ष थे। कांग्रेस के मंच से स्वागताध्यक्षीय भाषण हिंदी में देने वाले स्वामी जी सबसे पहले व्यक्ति थे। यहां एक ऐतिहासिक घटना का उल्लेख अप्रासंगिक नहीं होगा। म० गांधी दक्षिण अफ्रीका में ही थे। पत्र-व्यवहार के द्वारा ही म० गांधी और स्वामी का पारस्परिक परिचय हुआ था, महात्मा जी ने स्वामी जी को पहला पत्र अंग्रेजी में लिखा था, उसका उत्तर स्वामी श्रद्धानन्द जी ने हिन्दी में दिया और उसमें लिखा, ''उस व्यक्ति को जो हिन्दी को राष्ट्र भाषा बनाना चाहता है, अपने देश वासियों से अंग्रेजी में पत्र-व्यवहार करने का कोई अधिकार नहीं है। ''फलस्वरूप गांधी जी ने पुन: स्वामी जी को अंग्रेजी में पत्र नहीं लिखा।

(भारतीय नेताओं की हिन्दी सेवा पृष्ठ ११३-११४)

आर्य समाज जन्म के आधार पर बनीं जातियों को स्वीकार नहीं करता। इस जाति प्रथा को तोड़ने का एक मात्र साधन हैं जन्म की जात-पात तोड़ कर विवाह सम्बन्ध स्थापित करना। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने जब अपनी सन्तान का विवाह सम्बन्धी जाति प्रथा को तोड़ कर किया। तो उसका घोर विरोध हुआ। जाति की रूढ़ि में बन्धे हुए आर्य समाजियों ने भी स्वामी जी के इस कार्य का विरोध किया। आज से छ: सात दशक पूर्व यह कार्य बहुत बड़े साहस का परिचय देता है।

जिस समयं गुरुकुल स्थापित करने का निश्चय किया तो छात्रों और धन का प्रश्न खड़ा हुआ। स्वामी जी ने अपने दोनों पुत्रों को गुरुकुल के अर्पण किया। धन संग्रह करने निकले तो सबसे पहले जालन्धर की अपनी कोठी बेच दी और गुरुकुल को लगभग ४०-५० हजार की रकम अर्पण कर दी और प्रतिज्ञा की कि इतना ही धन इकट्ठा करके ही वे लौटेंगे, और ऐसा ही हुआ। गांधी जी ने कितना उचित ही कहा था, स्वामी जी कर्मवीर थे, वचनवीर नहीं थे।'

कांग्रेस ने जब मुसलमानों द्वारा छेड़े खिलाफत आन्दोलन का पक्ष लिया तो देश में हिन्दू-मुस्लिम एकता का नारा लगा। दिल्ली के मुसलमानों ने जामा-मस्जिद में स्वामी श्रद्धानन्द जी का भाषण करवाया। शायद इस्लामी इतिहास में यह एक मात्र घटना हैं कि एक गैर मुस्लिम का भाषण वेद-मन्त्रों के पाठ के साथ मस्जिद में हुआ था।

स्वामी जी महाराज १९२६ में बीमार हो गये थे, शुद्धि आन्दोलन के कार्य ने उस ७० वर्षीय वृद्ध संन्यासी को थका दिया था। डॉ० अन्सारी का इलाज चल रहा था। शुद्धि आन्दोलन को लेकर हसन निजामी ने मुसलमानों में उत्तेजना और दुर्भावना फैला रखी थी। २३ दिसम्बर १९२६ को अब्दुल रशीद ने रोग शैय्या पर पड़े हुए स्वामी जी को पिस्तौल की गोलियों का निशाना बनाया, एक ओर डॉ० अन्सारी के रूप में एक मुसलमान स्वामी जी को रोग मुक्त करने का प्रयत्न कर रहा था और दूसरी ओर अब्दुर्रशीद नामक मुसलमान स्वामी जी के खून का प्यासा हो गया था। बचाने वाले की तुलना में मारने वाला अधिक शक्तिशाली सिद्ध हुआ और स्वामी जी शहीद हो गये।

अमर शहीद–स्वामी श्रद्धानन्द

ले.–श्री राधेश्याम आर्य एडवोकेट मुसाफिर खाना, सुलतानपुर (उ० प्र०)

देश और धर्म की बलिवेदी पर जिन अमर हुतात्माओं ने अपने प्राणों की बलि चढ़ाई है, उनमें स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती का नाम अग्रगण्य है। स्वामी श्रद्धानन्द जी जिनका पूर्व नाम मुन्शीराम था, भारत माता के सच्चे सपूत थे, जिन्होंने भारत की स्वतन्त्रता के लिए ही नहीं, बल्कि राष्ट्र की सामाजिक, धार्मिक एवं राजनीति दशा सुधारने में अपना सर्वस्व समर्पित कर दिया। महर्षि दयानन्द सरस्वती के सच्चे अनुयायी बनकर आर्य समाज एवं महर्षि की मान्यताओं के प्रचार व प्रसार में तन, मन, धन, मनसा–वाचा कर्मणा से कटिबद्ध हो गए। मुन्शीराम (स्वामी श्रद्धानन्द) का प्रारम्भिक जीवन उच्छृंखलताओं से परिपूर्ण था लेकिन युग प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती के सान्निध्य ने मुन्शीराम का जीवन ही पूर्णरूपेण बदल डाला। एक नास्तिक तथा भ्रष्ट पथों के अनुयायी को स्वामी दयानन्द के प्रथम दर्शन ने ही अगाध आस्तिक बना दिया तथा मुन्शीराम के जीवन में ऐसी जीवन शक्ति का संचार हुआ कि आगे चलकर वह समस्त विश्व का पथ प्रदर्शक बन गया। 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का सिंहनांद करने वाला वह बहादुर सेनानी कथनी व करनी में भेद नहीं मानता था, जब उसने आर्य समाज की मान्यताओं की प्रतिस्थापना समस्त धरती पर करने का संकल्प किया तो अपने गुरु स्वामी दयानन्द की भान्ति ही सच्चा सैनिक बनकर निकल पड़ा और इतिहास इस बात का साक्षी है कि स्वामी श्रद्धानन्द ने सफलताओं का मानदण्ड स्थापित कर दिया। स्वामी दयानन्द सरस्वती के उपरान्त आर्य समाज की सफलताओं में चार चांद जिन अमर बलिदानियों ने लगाया है उनमें भी स्वामी श्रद्धानन्द का स्थान नि:सन्देह सर्वोपरि है। 'यथा नाम तथा गुण' कहावत को चरितार्थ करते हुए स्वामी श्रद्धानन्द, श्रद्धा एवं आनन्द की साक्षात मूर्ति थे। सारा संसार उनका अपना था और सारे संसार की भलाई के लिए प्रतिक्षण वे उद्यत रहा करते थे। वैदिक धर्म के प्रचार के लिए स्वामी श्रद्धानन्द ने अनेकानेक कदम उठाएं। शास्त्रार्थ उपदेश एवं प्रवचनों से धूम मचा दी। एक बार ऐसा आभास हुआ कि स्वामी दयानन्द के समय का वातावरण पुनः भारत के वायु मण्डल में विनिर्मित हो रहा है। स्वामी श्रद्धानन्द की आस्था थी कि राष्ट्र एवं समाज का सुधार तभी सम्भव है जब राष्ट्र के भविष्य 'बच्चों' का सुधार किया जाए। इसी आस्था से अभिभूत होकर स्वामी श्रद्धानन्द ने महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा प्रतिपादित शैक्षिक सिद्धान्तों की स्थापना हेतु गुरुकुल खोलने का बीड़ा उठाया। संसार प्रसिद्ध गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय इस बात का ज्वलन्त साक्षी है कि श्रद्धानन्द जी का जीवन कितना तपस्वी त्यागमय, निष्ठामय था। भारतीय संस्कृति तथा सभ्यता के इस अनन्य उपासक ने गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के रूप में राष्ट्र को जो संस्था समर्पित की है, वह भारत राष्ट्र का एक गौरव है। महात्मा गान्धी जब पहली बार गुरुकुल पधारे तो अत्यन्त कारूणिक दृश्य उपस्थित था। राष्ट्र पिता, स्वामी श्रद्धानन्द के पैरों पर लोटने लगे और अपनी आंखों से अश्रुधारा छोड़ते हुए कहा–'महात्मन्, आपने मेरी आंखों के सामने प्राचीन भारत का दृश्य उपस्थित कर दिया है।' यही नहीं, स्वामी श्रद्धानन्द में राष्ट्र प्रेम प्रति क्षण उद्वेलित होता रहता था। भारत के स्वाधीनता संग्राम में स्वामी श्रद्धानन्द ने अपने को तथा अपने गुरुकुल को झोंक दिया था। स्वामी श्रद्धानन्द के बलिदान भरे जीवन से ही प्रेरित होकर आर्य समाज के हजारों नवजवान भारत की आजादी के लिए क्रान्ति पथ के पथिक बने थे। स्वामी श्रद्धानन्द तथा उनके गुरुकुल ने हर कदम पर महात्मा गांधी के आन्दोलनों में भी बराबर हिस्सा लिया था। वे वीरता तथा साहस की प्रतिमूर्ति थे। दिल्ली के चांदनी चौक में आजादी के लाखों दीवानों का नेतृत्व करते हुये उस बहादुर सेनापति ने अंग्रेजी फौज की संगीनों के समक्ष अपना सीना खोलकर ललकारा था–'चलाओ इस सीने पर गोलियां! दिखाओ अपनी ताकत! लेकिन इन निरीह देशभक्तों की ओर आंख उठाते की भी हिम्मत न करना।' फिर क्या था, अंग्रेजी संगीनों का मुख लज्जा से झुक गया। भारत की स्वतन्त्रा की कीमत स्वामी श्रद्धानन्द जैसे सेनापतियों ने ही तो चुकायी है। साम्प्रदायिक सद्भावना के भी वे प्रतीक थे। दिल्ली की विख्यात जामा मस्जिद से मुस्लिम भाईयों को उनका संबोधन इतिहास की वस्तु बन चुका है। वे चाहते थे कि सारी धरती पर प्यार एवं करुणा का प्रवाह हो, सहिष्णुता एवं सद्भावना का उद्भव हो, वैदिक धर्म की पताका के नीचे सारी धरती के लोग एक होकर सुख, समृद्धि एवं सफलता का जीवन व्यतीत करें। लेकिन धार्मिक उन्माद ने ही इस बहादुर सेनानी के जीवन का भी अन्त कर दिया, हिन्दू–मुस्लिम एकता के लिए सतत प्रयत्न शील रहने वाले स्वामी श्रद्धानन्द जैसे देवदूत की जीवन लीला, मुस्लिम धर्मान्धता के नशे में चूर, रशीद नामक एक मुसलमान ने २३ दिसम्बर (सन् १९२६ ई० को) को उन्हें अपनी गोलियों का निशाना बनाकर समाप्त कर दिया।

आज स्वामी श्रद्धानन्द हमारे बीच नहीं है लेकिन वीरता एवं साहस, त्याग एवं बलिदान, देश एवं धर्म भक्ति का जो पथ उन्होंने प्रशस्त किया है वह अनन्तकाल तक सारे संसार को प्रेरणा देता रहेगा। आज जब कि सारे देश में अराजकता, उद्दण्डता, असहिंष्णुता तथा साम्प्रदायिक मलोमालिन्य का वातावरण बना है। स्वामी श्रद्धानन्द के आदर्श एवं कार्य प्रकाश पुञ्ज का कार्य कर सकते हैं, महर्षि दयानन्द एवं आर्य समाज के सच्चे सैनिकों का यह पावन कर्त्तव्य है कि वे स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन से प्रेरणा ग्रहण कर, अपना जीवन राष्ट्र, समाज एवं धर्म की सेवा में समर्पित करें तभी हम उस महान् आत्मा के ऋण से उऋण हो सकेंगे।

शिक्षक विकास प्रोग्राम का आयोजन

आर. के. आर्य कॉलेज नवांशहर में एकैडमिक अफेयर्स कमेटी के द्वारा कार्यकारी प्रिंसिपल डा. संजीव डाबर की अगवाई हेतु डा. विनय सोफ्ट ने शिक्षक दिवस प्रोग्राम का आयोजन किया जो 15 नवम्बर 2018 से 21 नवम्बर 2018 तक रहा। इस अवसर पर कार्यकारी प्रिंसिपल डा. संजीव डाबर ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया जिसमें बी.एल.एम गर्ल्ज कॉलेज, डी. ए. एन. कॉलेज ऑफ एजुकेशन और आर. के. आर्य कॉलेज के शिक्षकों ने भाग लिया।

प्रिं. डाबर के अनुसार शिक्षक विकास प्रोग्राम किसी भी शिक्षक के कौशल एवं निपुणता को विकसित करने में सहायक होती है, साथ ही अध्यापक शोध एवं प्रशासनिक कार्य कुशलता को भी विकसित करने में सहायक है। शिक्षक विकास प्रोग्राम में प्रथम दिन आर. के. आर्य कॉलेज की प्रो. अमनदीप कौर ने अंक प्रणाली को समझाते हुऐ उसकी मानव जीवन में महत्ता पर जो दिया। उन्होंने बताया कि किस तरह अंक किसी भी गणना में, माप में, काम आता है, जिसके बिना आज हम जीवन की परिकल्पना भी नहीं कर सकते। दूसरे दिन डा. विशाल पाठक भौतिक विज्ञान ने रेडियोधर्मिता से सभी को अवगत करवाया। डां. विशाल ने रेडियोधर्मिता की उपयोगिता को समझाते हुए बताया कि तकनीक मैडीकल क्षेत्र में भी बहुत उपयोगी हैद्व चाहे वो बीमारियों का पता लगाना हो या बीमारी का ईलाज, ऊर्जा उत्पादन का हो या पुराने अवशेषों की उम्र का पता लगाना। तीसरे दिन प्रो. संजय चाँदवानी बी. एड. कॉलेज ने एक शिक्षक की समाज में भूमिका पर प्रकाश डाला। किसी भी छात्र के सफल होने में एक शिक्षक का उत्तम योगदान रहता है। किसी का भी व्यक्तित्व तभी निखरता है जब उसे एक प्रोत्साहन मिले और यह कार्य एक शिक्षक बखूबी निभाता है।

चौथे दिन प्रो. ब्रह्मप्रकाश बी. एल. एम. गर्ल्ज कॉलेज ने शारीरिक शिक्षा में एक प्रभावी शोध पत्र लिखने की क्रिया पर अपने विचार व्यक्त किये। एक शोध पत्र कुछ अंक प्राप्त करने का जरिया न होकर किसी शिक्षक की शोध क्षमता जैसे कि उसका किसी भी विषय पर कितनी गहनता से चिंतन करना, विश्लेषण करना और निष्कर्ष करने पर जोर दिया। पांचवे दिन प्रो. सुरजीत कौर इक्नामिक्स विभाग ने उपभोक्ता की व्यवहार कुशलता की मौलिक महत्ता के बारे में सभी को अवगत कराया।

शिक्षक विकास दिवस प्रोग्राम के अंतिम दिन कॉलेज प्रबन्धकीय समिति के सचिव श्री जे. के. दत्ताप एवं कॉलेज के प्रिंसिपल डॉ. संजीव डाबर ने सभी वक्ताओं को प्रशंसा पत्र प्रदान किये और प्रिंसिपल डॉ. संजीव डाबर ने सभी वक्ताओं का धन्यवाद किया। पांचों दिन मंच का संचालन डॉ. अंबिका गौड़ ने किया । इस मौके पर प्रो. मृदुला कालिया, प्रो. बी. पी. सिंह, प्रो. केवल कृष्ण, प्रो. निरदेश चौधरी और कॉलेज के सभी अध्यापकगण उपस्थित थे। **प्रिंसिपल आर. के. आर्य कॉलेज नवांशहर**

अमर बलिदानी : स्वामी श्रद्धानन्द

ले.-महात्मा चैतन्यमुनि महादेव सुन्दरनगर (हि.प्र.)

यजुर्वेद में अधिकतर लोग तो अपने अमूल्य जीवन को पशुओं के समान खाने-पीने, सोने, अपने से बलवान् से डरने तथा अपने से कमजोर को डराने और सन्तान पैदा करने में ही व्यतीत कर देते हैं और फिर एक दिन मर जाते हैं। कुछ अन्य धर्म के नामलेवा मात्र तो होते हैं मगर उनके जीवन में धर्म की व्यवहारिकता नहीं होती है। जिन्होंने केवल बाहरी आडम्बर और दिखावे को ही धर्म मान रखा होता है। कुछ ऐसे भी होते हैं जो शास्त्रोक्त धर्म का अक्षरश: अनुपालन करके अपने जीवन को सार्थकता प्रदान करते हैं। इन सबसे ऊपर, चाहे बहुत कम संख्या में ही सही कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो तप, त्याग एवं अद्भुत प्रतिभा से अपने जीवन को संवारकर समूचे विश्व एवं पूरी मानवता की सेवा के लिए समर्पित कर देते हैं। स्वामी श्रद्धानन्द जी एक ऐसे ही दिव्य महापुरूष थे जिन्होंने अपने जीवन को अत्यन्त पतनावस्था से ऊपर उठाकर आत्मन: देश, धर्म और मानव-मात्र की सेवा के लिए समर्पित कर दिया। उनके गुरु महर्षि दयानन्द जी ने आर्य समाज जैसी सार्वभौमिक एवं दिव्य संस्था के जो दस नियम बनाए, स्वामी जी उन नियमों को अक्षरश: जीवन में कार्यान्वित करने वाले महानात्मा थे। उन्होंने जीवन की पगडण्डियों में भटकाव के भंवर भी देखे थे मगर जब महर्षि दयानन्द जी रूपी पारसमणि से उनका सम्पर्क हुआ तो वे सर्वात्मना कुन्दन बन गए और जीवन की उन उंचाईयों को छूआ जिसकी कोई कल्पना भी नहीं कर सकता था। महर्षि जी के सम्पर्क में आकर वे न केवल आस्तिक बनें बल्कि उनके समूचे जीवन का कायाकल्प ही हो गया...

जिला जालन्धर के पूर्वी कोने पर सतलुज नदी के किनारे तलवन नाम का एक उपनगर है जहां लाला नानकचन्द जी के घर 23 फरवरी, सन् 1857 को एक बालक का जन्म हुआ जिसका नाम तो बृहस्पति रखा गया मगर यह बालक मुन्शीराम के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इन्हीं मुन्शीराम जी ने बाद में स्वामी श्रद्धानन्द नाम से ख्याति अर्जित की। मुन्शीराम की पढ़ाई विधिवत् नहीं हो पाई तथा उन पर कुसंगति का प्रभाव भी धीरे-धीरे पड़ने लगा। रही-सही कमी अंग्रेजी शिक्षा पद्धति ने पूरी कर दी और मुन्शीराम के आचार-विचार पूरी तरह से दूषित होते चले गए। यह देखने में आया है कि अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त अधिकतम व्यक्ति अपनी संस्कृति और संस्कारों से दूर हो जाते हैं। वे स्वयं लिखते हैं-'मैनें भी उसी विद्यालय में शिक्षा पाई थी जिसने हिन्दू युवकों को अपनी प्राचीन संस्कृति का शत्रु बना दिया था।' कुसंगति के कारण ही मुन्शीराम मांस, मदिरा, जुआ, शतरंज, हुक्का तथा दुराचारादि व्यसनों में फंस गए। कुछ घटनाएं ऐसी भी हुईं जिनके कारण उन्हें मत, मज़हब आदि से घृण हो गई तथा उनके भीतर नास्तिकता के भाव घर कर गए। श्रावण 14, संवत् 1936 के दिन योगीराज महर्षि दयानन्द सरस्वती जी बरेली पधारे। अपने पिता लाला नानकचन्द जी के कहने पर मुन्शीराम अनमने भाव से महर्षि जी को सुनने गए और उनसे अनेक शंकाओं का समाधान करके न केवल आस्तिक बनें बल्कि समस्त दुरितों को त्यागकर तपस्वी जीवन जीने लगे। अपनी पुस्तक 'कल्याण-मार्ग का पथिक' के प्रारंभ में ही 'ऋषि-दयानन्द के चरणों में सादर समर्पण' के अन्तर्गत महर्षि के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट की है। मुन्शीराम जी के जीवन पर उनकी पतिव्रता धर्मपत्नी श्रीमती शिवदेवी जी की भी प्रेरणा एवं सहयोग रहा है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के सत्संग से मुन्शीराम जी की जो आत्मा आस्तिकता की ओर उद्बुद्ध हुई थी, शिवदेवी जी के सेवा एवं सहयोग ने उनकी कलुषित आत्मा को पूरी तरह से झकझोर कार रख दिया। उन्होंने मांस-भक्षण तथा मदिरापान आदि का त्याग कर दिया।

स्वामी श्रद्धानन्द जी स्वयं में एक इतिहास थे। उनके जीवन का कार्यक्षेत्र इतना विशाल एवं बहुआयामी था कि उनके सामर्थ्य पर आश्चर्य होता है। वे अत्यधिक आत्मविश्वासी, निर्भीक एवं उत्साही ही नहीं थे बल्कि सच्चे ईश्वर-भक्त, देश-भक्त एवं समाज-सेवक भी थे। उनका दृष्टिकोण मानवतावादी एवं सार्वभौमिक था मगर जहां देशहित की बात आती थी तो देश की अस्मिता उनके लिए सर्वोपरि हो जाती थी। वे संकुचित जातिवाद, मत-मज़हबवाद, क्षेत्रवाद आदि भावनाओं से एकदम मुक्त थे। यह कारण है कि वे मानव-मात्र के हितैषी बनकर सर्वपूज्य बनें। वे प्रथम व्यक्ति थे जिन्होंनें दिल्ली की प्रसिद्ध जामा-मस्जिद से वेद मन्त्र के माध्यम से भाई-चारे का सन्देश दिया था। गुरू का बाग़ आन्दोलन में उनकी प्रमुख भूमिका रही है। जलियांवाला बाग के हत्याकाण्ड के बाद जब समूचा देश सहमा हुआ था तो ये ही थे जिन्होनें कांग्रेस अधिवेशन का स्वागताध्यक्ष-पद स्वीकार करने का साहस किया था। गोरे सैनिकों की संगीनों के समक्ष छाती तानकर खड़ा होने वाला यह साहसी वीर अकल्पनीय है। गोरक्षा, हिन्दी प्रचलन और शुद्धि आन्दोलन की कड़ी बनना उनके जीवन का एक अत्यधिक महत्वपूर्ण अंग था क्योंकि यही हमारी राष्ट्रीय एकत और अस्मिता का आधार-भूत सूत्र था और है। शिक्षा के क्षेत्र में उन्होनें जो कार्य किया वह अपने आप में बहुत ही सार्थक एवं अनुपम है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने जिस शिक्षा-पद्धति का प्रचलन अनिवार्य माना था, स्वामी जी ने उसे व्यवहारिक रूप देने के लिए कितना तप और त्याग किया यह इस बात से स्पष्ट होता है कि 3 अक्तूबर, 1897 को जालन्धर में एक बैठक हुई जिसमें सर्वसम्मति से गुरूकुल खोलने का निर्णय लिया गया। मुन्शीराम जी ने प्रतिज्ञा की कि जब तक वे गुरूकुल के लिए तीस हजार रूपए एकत्रित नहीं कर लेते, वे घर में पैर नहीं रखेंगे। इस प्रतिज्ञा को पूरा करने के मार्ग में अनेक बाधाएं आई मगर धुन के धनी एवं दृढ़-निश्चयी मुन्शीराम जी ने तीस हजार के स्थान पर चालीस हजार रूपए एकत्रित कर लिए। अप्रैल 8, सन् 1900 तक चालीस हजार रूपए की राशि एकत्रित हो जाने पर आर्यसमाज लाहौर में एक बड़ा उत्सव मनाया गया, मुन्शीराम जी का जलूस निकाला गया, उन्हें अभिनन्दित किया गया तथा उन्हें महात्मा की पढ़वी से विभूषित किया गया। महात्मा जी ने अपनी वकालत का परित्याग कर दिया और अपने दोनों पुत्रों को सर्वप्रथम गुरूकुल में पढ़ने के लिए भेजा। उन्होनें न केवल अपना पुस्तकालय बल्कि 'सद्धर्म प्रचारक प्रैस' भी जिसकी कीमत उस समय आठ हजार से कम न थी, गुरूकुल के चरणों में चढ़ा दी। यही नहीं त्यागमूर्ति महात्मा जी ने तीस हजार से अधिक रूपया लगाकर बनाई हुई जलन्धर की कोठी भी गुरूकुल को अर्पित कर दी। नज़ीबाबाद के रईस चौधरी मुन्शी अमन सिंह जी ने अपना कांगड़ी ग्राम और उसके आस-पास की 1200 बीघा भूमि गुरूकुल को दान करके अपना नाम सदा के लिए अमर कर लिया। कठोर परिश्रम से कुछ झोंपड़ियों का निर्माण करके विधिवत् गुरूकुल का शुभारंभ हो गया। महात्मा मुन्शीराम जी को ही गुरूकुल का मुख्याधिष्ठाता नियत किया गया। गुरूकुल के लिए महात्मा जी ने खून-पसीने से सींचने वाली उक्ति को चरितार्थ किया।

सन् 1926 में कराची की असगरी बेगम नाम की एक मुसलमान स्त्री अपने दो बच्चों और भतीजे के साथ दिल्ली आर्य समाज में आई और उसने आर्य धर्म स्वीकार करने की इच्छा प्रकट की तथा उसकी इच्छानुसार उसका 'शुद्धि-संस्कार' करके शान्तिदेवी नाम रखा गया। लगभग तीन महीने के बाद उसके पिता मौलवी ताजमुहम्मद खां उसे खोजते हुए दिल्ली आए। कुछ दिनों के बाद उसके पति अब्दुल हलीम भी आए। उन्होनें शान्तिदेवी से पुन: इस्लाम कबूल करके वापस चलने का आग्रह किया मगर उसने ऐसा करने से इन्कार कर दिया। इस पर शान्तिदेवी के प्रति ने स्वामी जी पर फौजदारी का एक मुकद्दमा चला दिया। मिस्टर लुडस सिटी मैजिस्टेट ने अगले चैम्बर में बुलाकर शान्तिदेवी को बुलाकर एक घण्टा भर बातचीत की, परन्तु उसका कोई परिणाम नहीं निकला और मैजिस्टेट ने मुकद्दमा खारिज कर दिया। इससे मुसलमान भड़क उठे। शान्तिदेवी के पिता ने स्वामी जी के पास आकर धमकी दी कि-'हम पठान लोग हैं, जिनके लिए खून व कत्ल करना बहुत सरल है।' स्वामी ने तुरन्त अपनी कुर्सी से खड़े होकर कहा-'मैं तो हथेली पर सिर लिए घूमता हूँ।' आठ दिसम्बर, 1926 को स्वामी जी गुरूकुल गए और अत्यधिक ठण्ड के कारण उन्हें ब्रांको-निमोनिया हो गया। 23 दिसम्बर, 1926 को सेवक धर्म सिंह ने कमोड लाकर दिया और शौचादि से निवृत्त होकर स्वामी जी मसन्द के सहारे बैठ गए। तभी धर्म सिंह ने सीढ़ियों से किसी युवक को आते हुए देखा। उसने उसे रोकना चाहा मगर स्वामी जी ने आवाज सुन ली तथा धर्म सिंह से कहा कि कौन है? इसे आने दो। अब्दुल रसीद नमक उस मुस्लिम युवक ने आकर स्वामी जी से कह

(शेष पृष्ठ 7 पर)

पृष्ठ 6 का शेष-अमर बलिदानी: स्वामी श्रद्धानन्द

कि वह उनसे इस्लाम के मुतल्लिक कुछ बातचीत करना चाहता है। स्वामी जी ने कहा कि भाई, मैं बीमार हूँ तुम्हारी दुआ से राजी हो जाऊंगा तो बातचीत करूंगा। तभी उस युवक ने पानी मांगा और स्वामी जी के आदेश पर धर्म सिंह पानी लेने बाहर गया। इधर उस दुष्ट युवक ने मसन्द के सहारे बैठे हुए स्वामी जी पर तीन गोलियां चला दीं। धर्म सिंह आगे बढ़ा तो उसकी टांग पर भी एक गोली चला दी। वह हत्यारा वहां से भागना ही चाहता था कि स्वामी जी के मन्त्री पण्डित धर्मपाल जी ने आकर उसे दबोच लिया। पुलिस ने आकर उस युवक को पकड़ लिया मगर इधर युगपुरूष स्वामी श्रद्धानन्द जी की अद्‌भुत जीवन यात्रा का शाम के लगभग चार बजे अवसान हो गया।

आज हमारे संगठन की क्या स्थिति है यह बात सर्वविदित ही है मगर एक वह भी समय था जो आर्य समाज का स्वर्ण-युग कहलाता है। कोई भी युग अपने-आप में अच्छा या बुरा नहीं होता बल्कि उस युग के व्यक्ति ही उस युग को स्वर्णिम बनाते हैं। वह स्वर्ण-युग था क्योंकि उस समय हमारे पास लाला लाजपतराय जैसे निर्भीक एवं ओजस्वी व्यक्ति थे। वैदिक-धर्म की बलिवेदी पर तिल-तिल होकर जलने वाले पण्डित गुरूदत्त जैसे तपस्वी थे। अपना सर्वस्व न्यौछावर करने वाले अद्‌भुत प्रतिभा के धनी स्वामी दर्शनानन्द थे। अपना जीवन अर्पित करने वाले महात्मा हंसराज जी थे। धर्म पर बलिदान होने वाले पण्डित लेखराम, महाशय राजपाल जैसे अनेक वीर थे। वेदानन्द तीर्थ, चमूपति जैसे चिन्तक थे, पण्डित रामचन्द्र देहलवी और ठाकुर अमर सिंह जैसे मेधा के धनी शास्त्रार्थ महारथी थे। स्वामी श्रद्धानन्द जैसे अपना सर्वस्व स्वाहा करने वाले त्यागी थे। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अपना शरीर तो मानव-कल्याण एवं देश-हित में बलिदान किया ही मगर उससे पूर्व उन्होंने अपनी समस्त धन-सम्पदा अपने मिशन के लिए समर्पित कर दी थी। स्वामी जी महाराज एक ऐसे अद्‌भुत एवं बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे कि उनके स्मरण मात्र से ही हमारे भीतर ओस्जविता, कर्मठता और बलिदानी भावनाओं का संचार होने लगता है। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अपने तप और त्याग द्वारा संसार में ऐसे अद्‌भुत कार्य किए जिनके कारण उन्हें सदा-सर्वदा स्मरण किया जाता रहेगा। उनके बलिदान दिवस के अवसर पर हमें प्रेरणा लेनी चाहिए कि हम भी अपने तप, त्याग और कर्मठता के साथ वैदिक धर्म की सेवा करने के लिए निःस्वार्थ भाव से आगे बढ़कर पुन: आर्य समाज का स्वर्णयुग लौटाने की दिशा में आत्मना समर्पित होकर अपने जीवन को सार्थकता प्रदान करें।

आर्य समाज दीनानगर का चुनाव सम्पन्न

दिनांक 9-12-2018 को आर्य समाज दीनानगर का चुनाव स्वामी सन्तोषानन्द जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ जिसमें सर्व प्रथम प्रधान रघुनाथ शास्त्री जी ने पिछले तीन वर्ष के कार्यकाल पर प्रकाश डाला। तत्पश्चात् कोषाध्यक्ष श्री राजेश महाजन जी ने पिछले तीन वर्ष का लेखा जोखा प्रस्तुत किया उसके बाद महामन्त्री रमेश महाजन ने पिछली तीन वर्ष की रिपोर्ट पढ़ कर सुनाई उसके ऊपर सभी ने अपनी सहमति दी, तत्पश्चात् श्री वेद प्रकाश ओहरी ने श्री रघुनाथ सिंह शास्त्री को दोबारा प्रधान पद के लिए नाम प्रस्तुत किया, सभी सदस्यों ने सर्व सम्मति से उनके नाम का अनुमोदन किया और उनको अपनी कार्यकारिणी बनाने का अधिकार दिया। प्रधान श्री रघुनाथ सिंह शास्त्री ने अपनी कार्य कारिणी का चुनाव इस प्रकार किया-

1. प्रधान-रघुनाथ सिंह शास्त्री, 2. महामन्त्री-रमेश महाजन, 3. कोषाध्यक्ष-राजेश महाजन, उप प्रधान, अरूण विज, प्रिंसीपल गन्धर्व राज महाजन, वेद प्रकाश ओहरी, मन्त्री-ईश्वर भल्ला, योगेन्द्र पाल गुप्ता, दिनेश सिंह प्रचार मन्त्री-श्री भारतेन्दु ओहरी, पुस्तकालयध्यक्ष-लक्ष्मी नारायण, लेखा निरीक्षक-मनोहर लाल शर्मा, प्रैस सचिव-रवीन्द्र सिंह सोढी, स्टोर कीपर-सुमित महाजन, अन्तरंग सदस्य-धर्म इन्दु गुप्ता, मनोरंजन ओहरी, अनिल गुप्ता, विश्व इन्दु ओहरी, प्रेम भारत, रणजीत ओहरी, प्रिं. अजमेर सिंह बैंस, मनोहर सैन ओहरी, राधेश्याम महाजन, हर्ष आर्य, यतीन्द्र शास्त्री, बाबा लाल महाजन, सरदारी लाल

-रमेश महाजन, महामन्त्री आर्य समाज दीनानगर

उत्सवीय सूचना

आपको यह जानकर अति हर्ष होगा कि आप सभी महानुभावों के स्नेह, सौहार्द, सद्‌भावना से संचालित गुरुकुल हरिपुर, जुनानी का नवम वार्षिक महोत्सव दिनांक 26, 27, 28 जनवरी 2019 शनि, रवि, सोमवार को देश के लब्धप्रतिष्ठित विद्वानों, साधु-सन्तों, सद्‌गृहस्थियों एवं श्रद्धालु आर्यजनों की पावन उपस्थिति में सम्पन्न होने जा रहा है। इन तिथियों में आप अन्यत्र कहीं कार्यक्रम न बनाकर सपरिवार गुरुकुल तीर्थ, साधु-सन्त दर्शन, आत्मनिर्माण तथा समाज सेवा में अहर्निश समर्पित गुरुकुल, ऋषिकुल, आचार्यकुल के आदरणीय आचार्यों तथा ब्रह्मचारियों का दर्शन कर पुण्य लाभ प्राप्त करें।

आगामी प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन 3 फरवरी 2019 को बरनाला में

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) जालन्धर की अन्तरंग सभा दिनांक 11 नवम्बर 2018 के निश्चयनुसार सभा के तत्वावधान में आगामी प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन **3 फरवरी 2019** रविवार को बरनाला में करने का सर्वसम्मति से निश्चय किया गया है। इस अवसर पर उच्चकोटि के वैदिक विद्वान् वक्ता, सन्यासी, संगीतज्ञ एवं नेतागण पधारेंगे। कार्यक्रम की विस्तृत सूचना समय-समय पर आपको आर्य मर्यादा साप्ताहिक द्वारा मिलती रहेगी। इसलिए 3 फरवरी 2019 की तिथि को कोई कार्यक्रम न रखकर पंजाब की सभी आर्य समाजें अधिक से अधिक संख्या में बरनाला में पहुंच कर अपने संगठन का परिचय दें। इससे पूर्व भी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब 19 फरवरी 2017 को लुधियाना में और 5 नवम्बर 2017 को नवांशहर में सफल प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन का आयोजन कर चुकी है इसलिये सभी आर्य समाजों के पदाधिकारियों से निवेदन है कि इस अवसर पर बड़ी संख्या में पधारने का कष्ट करें।

प्रेम भारद्वाज
महामन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

पौष मास की संक्रान्ति एवं 54वां वार्षिक उत्सव प्रारम्भ

महर्षि दयानन्द मठ ढन्न मोहल्ला जालन्धर का 54 वां वार्षिक उत्सव 16 दिसम्बर रविवार को पौष मास की संक्रान्ति के साथ प्रारम्भ हो गया है। इस कार्यक्रम का समापन 23 दिसम्बर रविवार को स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस पर होगा। इस अवसर पर सभी श्रद्धालुओं ने पौष मास की सक्रान्ति के उपलक्ष्य में यज्ञ किया। श्री सुरेश शास्त्री जी ने पौष मास की संक्रान्ति के महत्त्व को बताया और श्री राजिन्द्र शिंगारी पतंजलि योग प्रमुख ने योग विषय पर सुन्दर चर्चा प्रस्तुत की। उन्होंने बताया कि योग से सभी रोगों को दूर किया जा सकता है। इस अवसर पर महर्षि दयानन्द मठ के सभी अधिकारी तथा अन्य लोग उपस्थित थे। शांतिपाठ के साथ कार्यक्रम का समापन किया गया।

राजिन्द्र देव विज महामन्त्री दयानन्द मठ

वर्ष 2019 के नए कैलेण्डर मंगवाए

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, चौक किशनपुरा जालन्धर द्वारा प्रति वर्ष हजारों की संख्या में नव वर्ष के कैलेण्डर महर्षि दयानन्द के चित्र के साथ देसी तिथियों सहित छपवाए जाते हैं। गत कई वर्षों से आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब वैदिक साहित्य आधे मूल्य पर आर्य जनता को उपलब्ध करवा रही है। इसी प्रकार सन् 2019 के महर्षि दयानन्द सरस्वती के चित्र वाले कैलेण्डर भी आधे मूल्य पर आर्य जनता को दिए जाएंगे। पिछले वर्ष की भान्ति इस वर्ष भी कैलेण्डर का मूल्य पांच रुपये प्रति तथा 500 रुपए सैकड़ा रखा गया है। इसलिये सभी आर्य समाजें, शिक्षण संस्थाएं व आर्य बन्धु शीघ्र अति शीघ्र कैलेण्डर सभा कार्यालय से मंगवा कर अपने सदस्यों व इष्ट मित्रों में वितरित करें। कार्यालय का समय प्रात: 10.00 बजे से सायं 5 बजे तक है। रविवार को अवकाश रहता है इसलिये समय पर अपना व्यक्ति भेज कर कैलेण्डर मंगवाएं।

प्रेम भारद्वाज
सभा महामंत्री

 रजि. नं. पी.बी./जे.एल–011/2018–20 RNI No. 26281/74

आर्य समाज वेद मंदिर भार्गव नगर में मनाया त्यागमूर्ति गंगाराम जी का जन्म दिवस

आर्य समाज वेद मंदिर भार्गव नगर जालन्धर में गत दिनों त्यागमूर्ति लाला गंगाराम जी का जन्म दिवस बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर आर्य समाज वेद मंदिर भार्गव नगर जालन्धर के संरक्षक श्री सरदारी लाल जी आर्य, श्री अशोक परूथी जी एडवोकेट रजिस्ट्रार आर्य विद्या परिषद पंजाब, श्री कमल किशोर जी आर्य संरक्षक, श्री सुदेश कुमार जी वरिष्ठ उप प्रधान आर्य समाज, लुधियाना से विशेष रूप से पधारे श्री बंटी कौंसलर को सम्मानित करते हुये जबकि चित्र दो में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के कोषाध्यक्ष श्री सुधीर शर्मा जी एवं श्री अशोक परूथी जी एडवोकेट रजिस्ट्रार को सम्मानित करते हुये आर्य समाज के प्रधान श्री राज कुमार एवं संरक्षक श्री सरदारी लाल जी।

आर्य समाज वेद मन्दिर भार्गव नगर जालन्धर में त्यागमूर्ति लाला गंगाराम जी का जन्मदिन 12 नवम्बर से 18 नवम्बर 2018 तक बड़ी श्रद्धा और उत्साह के साथ मनाया गया। 12 नवम्बर से 17 नवम्बर तक सायंकाल 7:30 से 10:00 बजे तक माता सत्या, कान्ता देवी, शीला देवी के भजन हुए। उसके बाद बस्ती वावा खेल से श्री सुरेन्द्र आर्य जी के बहुत ही सुन्दर और मनोहर भजन हुये। मुरादाबाद से आये आचार्य महावीर जी मुमुक्षु द्वारा ओ३म् एवं गायत्री मन्त्र पर सारगर्भित विचार रख कर श्रोताओं को ईश्वर के साथ जुड़ने की प्रेरणा दी। सत्संग के पश्चात रोज लंगर का प्रबन्ध किया गया था। 18–11–2018 को सुबह 9:30 बजे विश्व शान्ति यज्ञ आचार्य महावीर जी मुमुक्षु, पं. मनोहर लाल आर्य, पं. विजय शास्त्री द्वारा किया गया। यज्ञ के पश्चात सभी यजमानों को विद्वानों द्वारा आशीर्वाद दिया गया। यज्ञ के पश्चात मुख्य सम्मेलन का कार्यक्रम श्री कमल किशोर आर्य जी की अध्यक्षता में प्रारम्भ हुआ। सर्वप्रथम माता सत्या, कान्ता व श्री सुरेन्द्र आर्य के बहुत ही सुन्दर भजन हुये। इस सम्मेलन में श्री सुदेश आर्य, पं. विजय शास्त्री, श्री बंटी कौंसलर लुधियाना, श्री अशोक परूथी एडवोकेट, श्री सरदारी लाल आर्यरत्न, श्री मोहिन्द्र भगत जी ने अपने–अपने विचार रखे। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की ओर से श्री अशोक परूथी रजिस्ट्रार तथा श्री सुधीर शर्मा कोषाध्यक्ष विशेष रूप से पधारे। आये हुए सभी मुख्य मेहमानों को सम्मानित किया गया। श्री राजीव टिक्का कौंसलर, श्री तरसेम सिंह कौंसलर, श्री बंटी जी कौंसलर लुधियाना, श्री कमल किशोर आर्य जी को विशेष सम्मान दिया गया। वेद मन्दिर की ओर से प्रधान श्री राजकुमार जी ने आये हुये सभी आर्य समाजों के प्रतिनिधियों, मुख्य अतिथियों तथा कार्यकर्ताओं का विशेष धन्यवाद किया। मंच का संचालन वेद मन्दिर के मन्त्री श्री बिशम्बर दास ने बड़ी कुशलतापूर्वक किया। शान्तिपाठ के पश्चात कार्यक्रम का समापन हुआ। कार्यक्रम के पश्चात सभी ने ऋषिलंगर ग्रहण किया।

सुदेश आर्य
वरिष्ठ उपप्रधान आर्य समाज

आर्य समाज वेद मंदिर संत नगर का वार्षिक उत्सव सम्पन्न

आर्य समाज वेद मंदिर संत नगर जालन्धर के वार्षिक उत्सव के अवसर पर आर्य समाज के प्रधान श्री जयचंद भगत एवं अन्य पदाधिकारी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के उप प्रधान श्री सरदारी लाल जी आर्य को सम्मानित करते हुये जबकि चित्र दो में मंच पर विराजमान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महोपदेशक श्री विजय शास्त्री जी, आर्य समाज आर्य नगर के महामंत्री श्री वेद आर्य जी, सभा के उप प्रधान श्री सरदारी लाल जी, श्री कमल किशोर जी आर्य एवं श्री मनोहर लाल जी आर्य जबकि माता सत्या एवं कान्ता जी भजन प्रस्तुत करती हुईं।

आर्य समाज वेद मन्दिर संत नगर बस्ती शेख जालन्धर का वार्षिक उत्सव 23 से 25 नवम्बर 2018 तक बड़ी धूमधाम से मनाया गया। 23, 24 नवम्बर को रात्रि 8:00 से 10:00 बजे तक श्री सुरेन्द्र आर्य के भजन तथा महोपदेशक श्री विजय शास्त्री के प्रवचन होते रहे। मुख्य उत्सव 25 नवम्बर 2018 रविवार को मनाया गया। इस कार्यक्रम का शुभारम्भ यज्ञ के द्वारा हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा पं. विजय शास्त्री एवं श्री मनोहर लाल आर्य थे। आये हुए सभी श्रद्धालुओं ने यज्ञ करके पुण्य प्राप्त किया। यज्ञ के ब्रह्मा एवं विद्वानों द्वारा सभी यजमानों को आशीर्वाद दिया गया। यज्ञ के पश्चात मुख्य कार्यक्रम आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के वरिष्ठ उपप्रधान श्री सरदारी लाल जी आर्यरत्न की अध्यक्षता में हुआ। ध्वजारोहण की रस्म श्री कमल किशोर आर्य संरक्षक आर्य समाज वेद मन्दिर भार्गव नगर के करकमलों द्वारा अदा की गई। इस अवसर पर श्री सुरेन्द्र आर्य तथा माता सत्या एवं बहन कान्ता जी ने अपने सुमधुर भजनों द्वारा आई हुई संगत को निहाल किया। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महोपदेशक श्री विजय शास्त्री जी ने अपने प्रवचनों के माध्यम से सभी को वेद मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी।

इस उत्सव में श्री महिन्द्र भगत जी, श्रीमती सुनीता रिंकू जी, श्री राजीव ओंकार टिक्का जी, श्री मेजर सिंह जी, श्री तरसेम लखोत्रा जी, श्री सुरिन्द्र मोहन एडवोकेट, श्री निर्मल आर्य, श्री पूरन चन्द भगत जी, श्री शिव भगत जी और सभी आर्य समाजों के प्रधान और सदस्यों ने भाग लिया। आर्य समाज वेद मन्दिर संत नगर के प्रधान श्री जय चन्द भगत जी ने आये हुए सभी मुख्य अतिथियों का धन्यवाद किया। शान्तिपाठ के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। तत्पश्चात सभी ने ऋषि लंगर ग्रहण किया।

जय चन्द भगत
प्रधान आर्य समाज संत नगर

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। **E-mail: apspunjab2010@gmail.com, www.aryapratinidhisabha.org**
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।